आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

- मराठी
- प्राचीनतम रूप 488 ई. के मंगलवेट्ठे ग्राम के ताम्रपत्र ।
- प्राचीनतम वाक्य 983 ई. के गोमतेश्वर के शिलालेख में।
- 12वीं सदी से साहित्य का प्रारम्भ।
- आदि कवि मुकुन्दराय(1128-1198) जिनका ग्रंथ-विवेकसिंधु।
- संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी प्रसिद्ध ग्रंथ।
- नामदेव,तुकाराम,रामदास,एकनाथ आदि प्रमुख कवि।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

- कोंकण या कोंकणी सबसे प्रसिद्ध बोली,उपबोलियों में कुंडाली,दालची,तथा चितपावनी आदि।
- मराठी भाषा के लिए देवनागरी लिपि प्रयोग।
- 1961 की जनगणना के आधार पर बोलने वालो की संख्या 33,286,771थी।
- उड़िया-
- उड़िसा प्रान्त की इसके अलावा बंगाल के मेदनीपुर,आन्ध्र में टेक्कालि,तरला,इच्छापुर,बिहार में सिंहभूमि,सराइकेला आदि।

संबंध मागधी अपभ्रंश से

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

उड़िया भाषी अपने देश को उड़िसा न कहकर ओड़िशा कहते हैं। स का श करना मागधी की प्रवृत्ति है।

- साहित्य समृद्ध । आदिकाल के कवियों में- लुइपा,शवरीपा मध्यकाल के कवियों में बलरामदास,
- जगन्नाथनाथ,पंचसखा,सालवाग आदि।
- उड़िया के कटक की कटकी,आन्ध्र की सीमा पर गजामी प्रमुख बोलियाँ
- उड़िया की अपनी लिपि जो ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित है उस पर तेलुगु लिपि का प्रभाव।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

बंगाली-बंगाल का संबंध प्राचीन नाम बंग से है।वहाँ की भाषा बंगाली बनी।

- 1000ई. के आसपास उत्पत्ति।डॉ.चटर्जी साहित्य को प्राचीन काल(950-1200)ख.मध्य काल(1200-1800) तथा आधुनिक काल(1800 से आज तक) काशीरामदास,चंडीदास,केकतादास आदि प्राचीन कवि तो बंकिमचंन्द्र,मधुसुदन दत्त, शरतचंन्द्र,रवीन्द्रनाथठाकुर आदि आधुनिक साहित्यकार।
- आधुनिक बंगाली साहित्य आधुनिक भारतीय

1931 की जनगणना के आधार पर 5 करोड़ 38 लाख से उपर बोलने वालों की संख्या।

- राजबंगशी,सराकी,खड़िया ठार,पहाड़िया ठार तथा माल पहाड़िया प्रमुख बोलियॉ।

असमीः-

- 13वीं सदी में बर्मा से आकर एक निषाद जाति के लोगों ने कबीला के रूप में राज्य स्थापित किया जो असम है।
- हेमसरस्वती का प्रहलाद-चरित्र प्राचीनतम रुप व पहली रचना
- पीताम्बर,शंकरदेव,माधवदेव तथा सूर्यखरीबलदेव प्रचीन साहित्यकार। तिब्बती-बर्मी तथा आस्ट्रिक भाषओं से शब्द-समह,महावरों तथा वाक्य-गठन

हिंदी की उपभाषाएँ-बोली

भौगोलिक विस्तार- राजस्थान,मध्य प्रदेश,उत्तर प्रदेश, बिहार,दिल्ली,हिमांचलप्रदेश,हरियाणा,उत्तराचंल की मुख्य भाषा तथा पंजाब नेपाल, हैदराबाद पुरे भारत तक बोली तथा समझी जाती है।

हिंदी की उपभाएँ	बोलियाँ
(1)राजस्थानीः	1.मारवाडी 2.जयपुरी 3.मेवाती 4.मालवी
(2)पश्चिमी हिंदीः-	1.ब्रज 2.बुन्देली 3.कन्नोजी 4.खडीबोली 5.हरियाणवी 6.दक्खिनी हिंदी
(3)पूर्वी हिंदीः-	1.अवधी 2.बधेली 3.छत्तीस गढी
(4)बिहारीः-	1.भोजपुरी 2.मगही 3.मैथिली
(5)पहाडीः-	1.गढवाली 2.कुमायूँनी 3.नेपाली

हिंदी की उपभाषाएँ-बोली

हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ

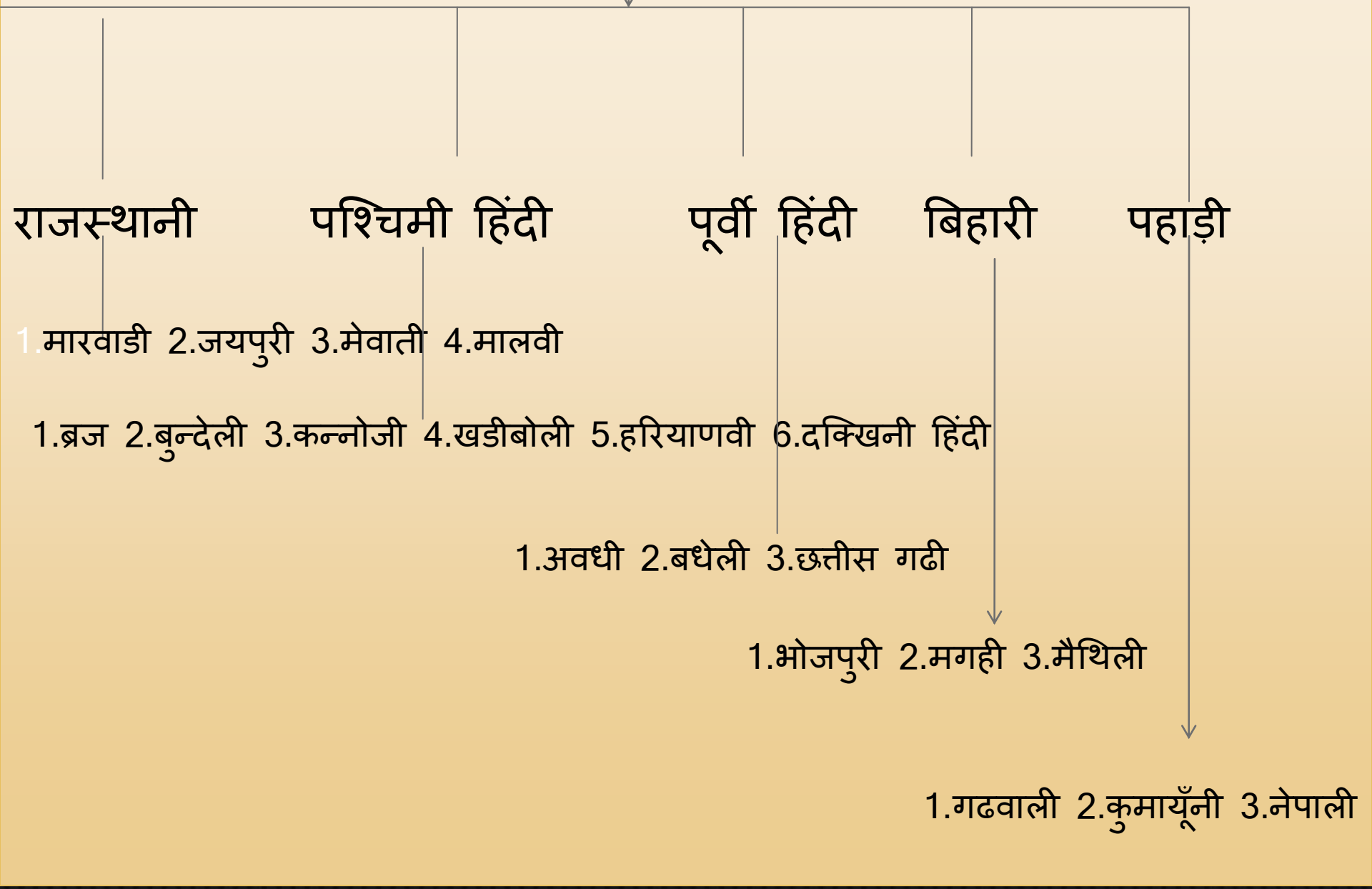

हिंदी की राजस्थान की उपभाषाएँ

1.मारवाडी-

मरुभूमि मरुधर देश को मारवाड़ कहते हैं।यहाँ की भाषा मारवाड़ी।

शुद्ध रूप जोधपुर का आसपास

12 उपबोलियाँ-बीकानेरी,शेखावाटी,मेवाडी प्रमुख

बोलने वालों की दृष्टि संख्या 1.करोड़ के आसपास।

साहित्य अधिक नहीं, प्राचीन राजस्थानी को डिंगल कहते हैं मूलतः मारवाडी है।

चन्दवरदायी,बाँकीदीस,मुरारीदास जैसे कवि।

रासों ग्रंथों,ढोला-मारू रा दोहा जैसी रचनाएँ।

हिंदी की राजस्थानी की उपभाषाएँ बोली

2.मालवी-

मालवा की बोली.उज्जैन के आसपास का क्षेत्र को प्राचीन काल में मालव कहा जाता था।

मालवी का शुद्ध रूप देवास,इन्दोर और उज्जैन में बुन्देली का प्रभाव।

मालवी और मारवाड़ी के बीच की भाषा।

साहित्य में संतो महात्माओं की वाणी के रूप में तथा लोक-साहित्य मिलता है।

हिंदी की राजस्थानी की उपभाषाएँ

(3)जयपुरी-

जयपुरी को ढूँढाँढ़ी भी कहते हैं जो क्षेत्र के आधार पर पड़ा।

17वीं शती के बाद जयपुर बसने के बाद इसे जयपुरी कहा गया।

हाड़ौती इसकी प्रमुख बोली जो कोटा और बूँदी में बोली जाती है।

साहित्य नहीं है।

प्रचीन डिंगल में ही इसका रूप

हिंदी की राजस्थानी की उपभाषाएँ

मेवाती-

मेवात का नाम मेवो जाति के कारण
और मेवात की बोली होने के कारण इसे मेवाती कहा गया।
अलवर, भरतपुर,गुड़गाँव के दक्षिण-पूर्व तक क्षेत्र।
साहित्य नहीं,
लोक-साहित्य ही मिलता है।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)ब्रज

- ब्रज का अर्थ होता है चलना। प्राचीन काल में ब्रज क्षेत्र के लोग गोचरण करते थे।इन गोपालकों की भाषा को ब्रज कहा
- मथुरा, आगरा, अलीगढ़ के क्षेत्र की मुख्य भाषा।
- सन् 1971 की जनगणना के आधार पर बोलने वालों की संख्या 2.05करोड़ के लगभग
- साहित्य समृद्ध, गुजरात से बंगाल तक
- कृष्णभक्ति काव्य की भाषा

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)ब्रज

- सूर तथा अष्टछाप के कवियों के अलावा मीरा,रहीम,रसखान बिहार,देव,पद्माकर,मतिराम,भारतेन्दु और रत्नाकर आदि ने।
- माधुर्य एवं समासोक्ति की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट ।
- ए का ऐ और ओ का औ कर दिया जाता है।ऊधो का ऊधौ,पाया का पायौ आदि उसके उदा.

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(2) खड़ी बोली:

खड़ी का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1800 में लल्लूलाल ने किया राहुल सांकृत्यायन ने इसे कौरवी नाम दिया।

- प्राचीन कुरु जनपद की बोली के आधार पर कौरवी कहा
- सहारनपुर,मुजफ्फरनगर,दिल्ली, मेरठ, देहरादून भाग मुख्य
- विगत 100 वर्षों में इस भाषा का आश्चर्यजनक ढंग सेविकास
- साहित्य का दृष्टि से समृद्ध कदाचित् अन्य किसी भाषा में इतना नहीं।

साहित्य की प्रत्येक विधा काव्य, उपन्यास, कहानी,नाटक, निबंध
पत्र-पत्रिकाएँ आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम रही।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(3) बुन्देली:-

बुंदेला राजपूतो का प्रदेश होने के कारण इसे बुंदेलखंण्ड कहा गया और य़हाँ की भाषा को बुंदेली

- ग्रियर्सन ने इसे बुंदेलखंण्डी ,अन्य नाम दार्शणी भी।
- उत्तर प्रदेश के बाँदा,हमीरपुर उरई,जालौन,झासी,मध्य प्रदेश के ग्वालीयर का पूर्वी भाग,भोपाल का कुछ भाग, होसंगाबाद क्षेत्र
- ब्रज भाषा का आधिपत्य
- एतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व
- रानी लक्ष्मीबाई,तुलसीदास की जन्मभूमि।
- लोक-साहित्य की दृष्टि से संम्पन्न

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(4)कन्नोजी

कन्नौज और उसके आस-पास बोली जाने वाली भाषा को **कन्नौजी** या **कनउजी भाषा** कहते हैं।

'कान्यकुब्ज' से 'कन्नौज' शब्द व्युत्पन्न हुआ

कन्नौज वर्तमान में एक जिला है जो उत्तर प्रदेश में है।

इसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों रामायण आदि में

कन्नौजी का विकास शौरसेनी प्राकृत से इसीलिए

आचार्य किशोरीदास बाजपेई ने इसे पांचाली नाम दिया।

वस्तुतः पांचाल प्रदेश की मुख्य बोली 'पांचाली' अर्थात् 'कन्नौजी' ही है।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(4)कन्नोजी

यह बोली उत्तर में हरदोई, शाहजहाँपुर और पीलीभीत तक तथा दक्षिण में इटावा, मैनपुरी और अलीगंज,बरेली, फरीदपुर तथा नवाबगंज, पीलीभीत, तथा सीतापुर दक्षिण पांचाल के लगभग समस्त जनपदों में 'कन्नौजी' का ही प्रचार-प्रसार है।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(4)कन्नोजी

यह बोली उत्तर में हरदोई, शाहजहाँपुर और पीलीभीत तक तथा दक्षिण में इटावा, मैनपुरी और अलीगंज,बरेली, फरीदपुर तथा नवाबगंज, पीलीभीत, तथा सीतापुर दक्षिण पांचाल के लगभग समस्त जनपदों में 'कन्नौजी' का ही प्रचार-प्रसार है।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(4)हरियाणवी

हरियाणवी -हरियाणा प्रान्त में बोली जाने के कारण मोटे रुप से इसको दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक उत्तरी हरियाणी दूसरा दक्षिणी हरियाणी उत्तर हरियाणी सरल तथा दक्षिणी हरियाणी को ठेठ हरियाणवी कहा जाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में हरियाणवी के कई रुप प्रचलित हैं जैसे बाँगर, राँघड़ी आदि।

हिंदी की पश्चिमी हिंदी की उपभाषाएँ

(5)दक्षिणी हिंदी

दक्खिनी हिंदी मूलतः हिंदी का ही पूर्व रूप है जिसका विकास ईसा की १४वी शती से १८बी शती तक दक्खिन के बहमनी, क़ुतुब शाही और आदिल शाही आदि राज्यों के सुल्तानों के संरक्षण मैं हुआ था। वह मूलतःदिल्ली के आस पास की हरियाणी एवं खडी बोली ही थी जिस पर ब्रजभाषा, अवधी और पंजाबी के साथ-साथ मराठी, गुजराती तथा दक्षिण की सहवर्ती भाषाओं आदि का भी प्रभाव पडा

यह मुख्यत फारसी लिपि में ही लिखी जाती थी। 'हिंदवी', हिंदी और 'दक्खिनी' ही कहा था। आधुनिक हिंदी और उर्दु की पूर्वगामी भाषा कहा जा सकता है।

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)अवधी -अवधी क्षेत्र (लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर, फैजाबाद, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर ..)
व्युत्पत्ति"अयोध्या" से है।
तुलसीदास ने अपने "मानस" में अयोध्या को 'अवधपुरी' कहा है। इसी क्षेत्र का पुराना नाम 'कोसल' भी था जिसकी महत्ता प्राचीन काल
6 करोड़ से ज्यादा लोग अवधी बोलते हैं।

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)अवधी हिंदी

उत्तर प्रदेश के 19 जिलों- बोली जाती है। जबकि 6 जिलों-जौनपुर, मिर्जापुर, कानपुर, शाहजहांबाद, बस्ती और बांदा के कुछ क्षेत्रों में इसका प्रयोग होता है। बिहार के 2 जिलों के साथ पड़ोसी देश नेपाल के 8 जिलों में यह प्रचलित है।

दुनिया के अन्य देशों- मॉरिशस, त्रिनिदाद एवं टुबैगो, फिजी, गयाना, सूरीनाम सहित आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड व हालैंड में भी लाखों की संख्या में अवधी बोलनेवाले लोग हैं।

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)अवधी हिंदी

तुलसीदास कृत रामचरितमानस एवं मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत सहित कई प्रमुख ग्रंथ इसी बोली की देन है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पं महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राममनोहर लोहिया, कुंवर नारायण की यह जन्मभूमि है।

उमराव जान, आचार्य नरेन्द्र देव और राम प्रकाश द्विवेदी की कर्मभूमि भी यही है।

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)अवधी हिंदी

प्राचीन अवधी साहित्य की दो शाखाएँ हैं : एक भक्तिकाव्य और दूसरी प्रेमाख्यान काव्य।
भक्तिकाव्य में गोस्वामी तुलसीदास का "रामचरितमानस" (सं. 1631) अवधी साहित्य की प्रमुख कृति
इसी भक्ति साहित्य के अंतर्गत लालदास का "अवधबिलास" आता है। इसकी रचना संवत् 1700 में हुई।
प्रेमाख्यान काव्य में सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ मलिक मुहम्मद जाएसी रचित "पद्मावत" है

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)अवधी हिंदी

प्रबंध की परंपरा में "रामचरितमानस" के ढंग का एक महत्वपूर्ण आधुनिक ग्रंथ द्वारिकाप्रसाद मिश्र का "कृष्णायन" है।

अवधी लोक साहित्य की एक समृद्ध परम्परा है। अवधी लोक साहित्य पर कई शोध हुए हैं। इनमें कुछ प्रमुख हैं- अवधी लोक साहित्य -डा॰ सरोजनी रोहतगी

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(2)बधेली

बधेल राजपूतो की भाषा जो रीवा के आसपास

अर्धमागधी अपभ्रंश से उदभव

इसका क्षेत्र रीव:, नागौद, शहडोल, सतना, मैहर

कुछ अपवादों को छोड़कर **बधेली** में केवल लोक साहित्य है ।

सर्वनामों में मुझे के स्थान पर म्वां, मोही, तुझे के स्थान पर त्वां, तोही,

विशेषण में हा प्रत्यय (नीच) , घोडा का ध्वाड़,

मोर का म्वार विशेषता ...

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(3)छत्तीसगढी

यह रायगढ, सरगुजा, विलासपुर, रायपुर, दुर्ग, जबलपुर त था बस्तर आदि में बोली जाती है।

किसी समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे, इसीलिये इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा।

श्री प्यारेलाल गुप्त अपनी पुस्तक " प्राचीन छत्तीसगढ़" में बड़े ही रोचकता से लिखते है - " छत्तीसगढ़ी भाषा अर्धभागधी की दुहिता एवं अवधी की सहोदरा है "

छत्तीसगढ़ी और अवधी दोनों का जन्म अर्धमागधी के गर्भ से आज से लगभग 1080 वर्ष पूर्व नवीं-दसवीं शताब्दी में हुआ था।"

हिंदी की पूर्वी हिंदी की उपभाषाएँ

(3)छत्तीसगढी

वीरगाथाओं में राजा वीरसिंह की गाथा प्रसिद्ध है। इसमें मध्यकालीन विश्वासों की प्रचुरता है। कुछ गीतों में देवता के पराक्रम का वर्णन है।

श्रवणकुमार संबंधी "सरवन" के गीत तथा "सरवन" की गाथा प्रसिद्ध है।

छत्तीसगढ़ी में ऋतुगीत, नृत्यगीत, संस्कारगीत, धार्मिक गीत, बालकगीत तथा अन्य प्रकार के विविध गीत पाए जाते हैं।

लोकोक्तियों तथा पहेलियों की भी कमी नहीं है।

हिंदी की बिहारी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)भोजपुरी

भोजपुरी भाषा प्रधानतया पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तरी झारखण्ड के क्षेत्रों में बोली जाती है। भोजपुरी भाषा का नामकरण बिहार राज्य के आरा (शाहाबाद) जिले में स्थित भोजपुर नामक गाँव के नाम पर हुआ है।

मध्य काल में इस स्थान को मध्य प्रदेश के उज्जैन से आए भोजवंशी परमार राजाओं ने बसाया था। उन्होंने अपनी इस राजधानी को अपने पूर्वज राजा भोज के नाम पर भोजपुर रखा था। इसी कारण इसके पास बोली जाने वाली भाषा का नाम "भोजपुरी" पड़ गया।

हिंदी की बिहारी हिंदी की उपभाषाएँ

(1)भोजपुरी

बोलने का स्थान:
भारत, नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम
लुप्तप्राय भाषा गुयाना और त्रिनिदाद और टोबैगो
मातृभाषाप्रयोगकर्ता: 4 करोड़
भोजपुरी भाषा का इतिहास 7वीं सदी से शुरू होता है - 1000 से अधिक साल पुरानी!
गुरु गोरख नाथ 1100 वर्ष में गोरख बानी लिखा था।
संत कबीर दास(1297) का जन्मदिवस *भोजपुरी दिवस* के रूप में भारत में स्वीकार किया गया है और विश्व भोजपुरी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी की बिहारी हिंदी की उपभाषाएँ

(2)मगही

क्षेत्र- बिहार के गया, पटना, राजगीर ,नालंदा , जहानाबाद,अरवल, नवादा और औरंगाबाद के इलाकों में
मगही का धार्मिक भाषा के रूप में भी पहचान है
कई जैन धर्मग्रंथ , मुख्य रूप से वाचिक परंपरा के रूप में यह आज भी जीवित है।,
मगही का पहला महाकाव्य गौतम महाकवि योगेश दर्जनो पुरस्कारो से सम्मानित आधुनिक मगही के सबसे लोकप्रिय कवि माने जाते हैं।
23 अक्तुबर को उनकी जयन्ति मगही दिवस के रूप
सन्2002में डॉ॰रामप्रसादसिंह को साहित्यअकादमी सम्मान
मगही बोलनेवालों की संख्या (2002) लगभग १ करोड़ ३० लाख है।

हिंदी की पहाड़ीवर्ग की उपभाषाएँ

(1)गढ़वाली

गढ़वाली भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ प्रचलित हैं। जौनसारी, जौनसार बावर तथा आसपास के क्षेत्रों के निवासियों द्वारा बोली जाती है।मार्छी, मर्छा (एक पहाड़ी जाति) लोगों द्वारा बोली जाती है।जधी, उत्तरकाशी के आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।सलाणी, टिहरी के आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

गढ़वाली में साहित्य प्राय: नहीं के बराबर है, किंतु लोक- साहित्य प्रचुर मात्रा में है। इसके लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है।

गढ़वाली का व्याकरण हिंदी से भिन्न है। दो ही लिंग हैँ,दो ही वचन ।

हिंदी की पहाड़ीवर्ग की उपभाषाएँ

(2)कुमायूँनी

क्षेत्र कुमायूँ होने के कारण इसे 'कुमायूँनी' कहते हैं।
'कुमायूँ' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'कूर्मांचल' से हैं।
ग्रियर्सन - बोलने वालों की संख्या लगभग 4,36,788 थी।
यह कुमायूँ कमिश्नरी के नैनीताल ,अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चमोली तथा उत्तरकाशी ज़िलों में बोली जाती है।
भाषा और बोलियों की दृष्टि से यह गढ़वाली, तिब्बती, नेपाली तथा पश्चिमी हिन्दी से घिरी है।
उपबोलियाँ- खसपरजिया, कुमयाँ या कुमैताँ, फल्दकोटिया, पछाई, चौगरखिया, गंगोला, दानपुरिया
'कुमाऊँनी' पर 'गढ़वाली' का इतना अधिक प्रभाव है

हिंदी की पहाड़ीवर्ग की उपभाषाएँ

(2)कुमायूँनी

'कुमायूँनी' पर 'राजस्थानी' का इतना अधिक प्रभाव है कि यह उसका एक रूप- सा ज्ञात होती है।
'कुमायूँनी' में पुराना साहित्य तो नहीं है, किंतु इधर लगभग डेढ़ सौ वर्षों से साहित्य- रचना हुई है।
यहाँ के पुराने साहित्यिकों में गुमानी पंत, कृष्णदत्त पांडे, सिवदत्त सत्ती आदि प्रधान हैं।
इसकी लिपि नागरी है।

हिंदी की पहाड़ीवर्ग की उपभाषाएँ

(3)नेपाली

नेपाली या **खस कुरा** नेपाल की राष्ट्र भाषा है।
यह भाषा नेपाल की लगभग ५०%लोगोंकी मातृभाषा भारत में सिक्किम,पश्चिम बंगाल, उत्तर-पूर्वी राज्यों (आसाम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय) तथा उत्तराखण्ड के अनेक लोगों की मातृभाषा है।
भूटान, तिब्बत और म्यानमारके भी अनेक लोग यह भाषा बोलते हैं।
नेपाली साहित्य के आदिकवि भानुभक्त आचार्य है। इस भाषा के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा है। इस भाषा के प्रमुख लेखक है:-बालकृष्ण सम,सिद्धिचरण श्रेष्ठ आदि